

# रबी की दलहनी फसलों की खेती में समस्याएँ और समाधान

उमा सिंह

सहायक प्राध्यापक  
सस्य विज्ञान विभाग,  
राजा बलबन्त सिंह कॉलेज  
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

जितेन्द्र कुमार

पी एच. डी.  
शोधार्थी  
सस्य विज्ञान विभाग,  
राजा बलबन्त सिंह कॉलेज  
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

---

## सारांश

बृजक्षेत्र तथा इसके आस-पास के क्षेत्रों में, रबी में तीन दलहनी फसलें उगाई जाती हैं-चना, मटर व मसूर। इनमें चना सबसे प्रमुख है जो विभिन्न प्रकार से दैनिक उपयोग में लाया जाता है। मटर को हरी सब्जी तथा दाल व बेसन के रूप में प्रयोग में लाते हैं तथा मसूर दाल और दालमोठ के रूप में अत्यन्त अपयोगी है। हरित क्रांति के पिछले कुछ दशकों के दौरान, कृषि विकास में उल्लेखनीय प्रगति हुई, परन्तु यह प्रगति मुख्यतः धान्य फसलों तक ही सीमित रही और परिणामस्वरूप हमने अन्ना के उत्पादन में तो आत्म-निर्भरता पा ली है। दलहनी फसलों के क्षेत्र में यह उपलब्धि निराशाजनक ही रही है क्योंकि हरित क्रांति के प्रारम्भिक वर्षों में ये फसलें

उपेक्षित ही रही यानी दलहनी फसलों के उत्पादन में हमें आत्मनिर्भरता पाने में अभी बहुत से पड़ाव पार करने हैं। दयनीय स्थिति यह है कि दलहन का हमारे आहार और कृषि में अत्यधिक महत्व होते हुए भी इनकी पैदावार में वृद्धि तेजी से हुई है। फलस्वरूप दलहन का प्रति वयस्क प्रतिदिन उपलब्धता चना 75 ग्राम, जो 1959-60 में थी, से घटकर 30 ग्राम के लगभग है। यदि इन फसलों की पैदावार न बढ़ी तो उपलब्धता इससे भी कम होने की आशका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और खाद्य एवं कृषि संगठन की संस्तुति के अनुसार प्रत्येक वयस्क को अपने आहार में प्रति दिन 144 ग्राम दालो को शामिल करना चाहिए। परन्तु अभी यह मात्रा 48 ग्राम प्रति व्यक्ति ही रह गयी है यदि दलहन के शुष्क क्षेत्रफल की उत्पादकता में वृद्धि लाई जाये तो इस सीमा को प्राप्त करना कठिन न होगा।

रबी की दलहनी फसलों की समस्याएँ हैं जिनमें मुख्य रूप से है

### **दलहनी फसलों की कृषिका वर्षों पर आधारित होना**

यद्यपि देश व बृज क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा बढ़ती जा रही है लेकिन दलहनी फसलों का 90-92 प्रतिशत क्षेत्रफल वर्षा पर आधारित है। ऐसी भी आशका है कि सिंचाई की सुविधा में वृद्धि होते हुए भी निकट भविष्य में दलहनी फसलों की खेती वर्षा पर आधारित होगी। रबी में मसूर तो बिना सिंचाई के उगाई जाती है। मटर तथा चना कुछ क्षेत्रों में सिंचाई देकर भी उगायी जाती है, परन्तु ऐसा क्षेत्रफल नगण्य है। अतः जहाँ मीठे पानी की सिंचाई की सुविधा है, वहाँ इन दलहनों में फली एवं दाना बनते समय यदि एक सिंचाई भी कर दी जाय तो पैदावार में काफी वृद्धि सम्भव है। असिंचित क्षेत्रों की उत्पादकता में कुछ सीमा तक षीघ्र पकने वाली प्रजातियों को उगाकर इनके क्षेत्रफल में वृद्धि करके पैदावार बढ़ाई जा सकती है।

**सुधरी एवं रोगरोधी प्रजातियों की कमी और उनका किसानों तक न पहुँच पाना-** देखा गया है कि प्रचलित देशी किस्में सुधरी किस्मों की तुलना में जहां उपज देती है, वहां रोगों के प्रति संवेदनशील भी होती है। इसके अलावा क्षेत्रीय किस्में प्रायः विलम्ब से पकने वाली होती है। अतः फसल जब तक पकने की अवस्था में आती है, जब तक नमी की कमी आ जाती है। आवश्यक नमी के अभाव में फसल की पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इन दशाओं में वह प्रजातियाँ जो अपेक्षाकृत शीघ्र पक जायें और रोगरोधी हों अधिक उपयोगी होती है। यह बड़े गर्व एवं प्रसन्नता की बात है कि गत कुछ वर्षों में अखिल भारतीय दलहन विकास की समन्वित परियोजना के अन्तर्गत इस फसलों की मात्रा और अधिक पैदावार देने वाली रोग रोधी किस्में विकसित की गई है

चना की पूसा 209, पूसा 212, पन्त जी 144, गौरव, अवरोधी, जीजी 555, हरियाना चना।मटर की सब्जी के लिये: शीघ्र पकने वाली: (60-70 दिन)

आरकेल, असौजी, जवाहर मटर 4, अली बंजर, वीसम 2

मध्यकालीन किस्में (80-90 दिन)

बौने बिले, हरा बोना, जवाहर मटर, पन्त उपहार, हरभजन

**दाने के लिये-** रचना, के पी एम आर 522, हंस, पीजी 1,अपरणा

**मसूर की-** पंत एन. 401, पन्त एल. 659

अतः चना, मटर एवं मसूर फसलों से अच्छी उपज के लिये किसान भाई सिंचित असिंचित क्षेत्र के आधार पर सही किस्म प्रजातियों का चयन करें।

दलहनी फसलों पर बीमारियों एवं कीटों का अनाज वाली फसलों की अपेक्षा व्यापक प्रकोप तथा किसानों के स्तर पर इन की रोकथाम का

**कारगर प्रयास न कर पाना-** दलहनी फसलों में पौध संरक्षण एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। कृषक क्षेत्रों पर हुए सर्वेक्षण से यह स्पष्ट ज्ञात हुआ है कि फसलों में औसतन 20-30 प्रतिषत की क्षति मात्र रोग और कीटों के प्रकोप से होती है। यदि सामयिक पौध संरक्षण अपनाया जाये तो काफी लाभ प्राप्त हो सकता है।

प्रमुख रोग व कीट एंव उपचार इस प्रकार करें:

### रोग का नाम

1. चने का उकठा रोग
2. मटर का रतुआ
3. मसूर का ग्लानि (उकठा रोग अंगमारी रोग)
4. चने का कटुआ
5. चने का फली वेधक
6. मटर की तना छेदक मक्खी
7. मटर की फली छेदक कीट

चना। लक्षण

1. इस रोग में पौधों की जड़ सड़ जाती है तथा इनका रंग भूरा हो जाता है।
2. ग्रीष्म ऋतु में खेत की मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करने से फफूँदी की मात्रा में कमी हो जाती है।
3. बीज को मिट्टी में 8 से 10 सेमी की गहराई पर नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में बोयें ।
4. इस रोग में पत्तियों और तनों पर पीले रंग के धब्बे पाये जाते है।
5. ऊपरी पत्तियाँ सिकुड़ कर सूखने लगती है जबकि भूरे रंग के धब्बे पत्तियों पर बनते है।

6. इस कीट का गिडार रात्रि के समय पौधों को जमीन की सतह से काट देती है।
7. इसकी गिडार प्रारम्भ में पत्तियों को काटती है बाद में फली के अन्दर सिर डालकर दानो को खाती है।
8. यह काले रंग की मक्खी होती है इसकी गिडारें तनों को छेद कर अन्दर से खा जाती है।
9. इसका प्रकोप अधिक देर से बोई गई फसलों पर होता है फलियों में छेद कर दानों को खा जाता है।
10. समय से फसलों के रोग एवं कीट के संरक्षण से आशतीत उपज प्राप्त की जा सकती है।

### उपचार

1. इस रोग के बचाव के लिये दलहनी दीर्घ अवधि का फसल -चक्र अपनाना उपयुक्त है।
2. वावास्टिन 25 प्रतिषत \$ थिरम 50 प्रतिशत (1: 1) की दर से 250 ग्राम प्रति कुन्तल बीज को उपचारित कर बोयें।
3. रोगरोधी किस्मों का चयन करे।
4. मेंगनीज कार्बोनेट का 2 किग्रा. प्रति हेक्टेअर की दर से छिड़काव करना चाहिए।
5. यह बीज जनित बीमारियाँ है। केप्टान अथवा थाइरम (2 ग्राम प्रति किलो बीज) से बीज को उपचारित करके बीमारियों से फसल को बचाया जा सकता है।
6. 10 प्रतिशत बी, एच, सी. की 25 किलोग्राम का, 5 प्रतिशत हेक्टाक्लोर का 30 किलोग्राम प्रति हेक्टर की दर से मिट्टी में बोने से पहले मिलना उपयुक्त है।

7. एन्डोसल्फान का 0.06 प्रतिशत अथवा रोगोर के दो छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करना चाहिए।
8. इन्डोसल्फान अथवा रोगोर के 1.5 ली. प्रति हेक्टेअर की दर से 800-1000 लीटर पानी मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।
9. 10 प्रतिशत बी.एच.सी. चूर्ण का भुरकाव 30 किग्रा. प्रति हेक्टेअर की दर से अथवा इण्डोसल्फान और रोगोर 1.5 लीटर की दर से पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

**बिना खाद अथवा नाममात्र को खादों का प्रयोग भी उपज न बढ़ा पाने में एक बाधा है-**

अधिकांश किसान दलहनी फसलों में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते ही नहीं और जो करते भी है सन्तुलित रूप में नहीं। परिणामतः सुधरी प्रजातियों की उपज क्षमता का सही-सही दोहन नहीं हो पाता। अतः किसान भइयों को चाहिए कि वह दलहनी फसलों में 20 किलोग्राम नत्रजन 50 किलोग्राम फॉसफोरस एवं 50 किलोग्राम पोटैश अवश्य दें। साथ ही दलहनी फसलों में जैविक खाद, जो बहुत ही सस्ते हैं का प्रयोग अवश्य करे। जिस खेत में काफी समय बाद इन फसलों को उगाया जा रहा हों तो जीवाणु खाद का टीका लगाना जरूरी है अन्यथा उपज ठीक नहीं होगी।

**कृषको तक नई विकसित दलहन प्रौद्योगिकी न पहुँच पाना-**

आज भी किसान भाई अपने हिसाब से दलहनों की खेती-बाड़ी कर रहे हैं। उन तक विकसित कृषि प्रौद्योगिकी नहीं पहुँच पा रही है। जिसके अभाव में उत्पादन बढ़ाने में काफी रूकावट आ रही है। प्रौद्योगिकी का प्रचार-प्रसार कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा व्यापक स्तर पर किया जाना अति आवश्यक है।

**छोटे एवं सीमान्त किसानों की अपनी मजबूरी भी काफी बड़ी बाधक है**

## **दलहन के उत्पादन में-**

आज सभी क्षेत्रों में लगभग 80 प्रतिशत किसान बहुत छोटी जोत वाले हैं अथवा सीमान्त किसान है जो गरीबी की रेखा के नीचे गुजर-बसर कर रहे हैं। उनकी पहली प्राथमिकता है अपने परिवार एवं पशुधन की आवश्यकता जो साल भर की है, की पूर्ति करना। ऐसी दशा में वह उन्हीं फसलों के चुनते है जो घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ लाभकारी मूल्य एवं स्थायित्व प्रादान करती है। ऐसे किसानो को सरकारी सहायता देकर दलहनों के उत्पादन में एक कारगर कदम हो सकता है।

**किसानों का नगदी वाली फसलों की तरफ रुझान-** जहाँ-जहाँ सिंचित क्षेत्र बढ़ रहा है वहाँ नगदी वाली फसलें जिनसे उत्पादन सुनिश्चित एवं लाभकारी है, जैसे आलू , ईख, लाहा, सरसों की खेती ने दलहन फसलों को एक किनारे कर दिया है जिसे सरकारी सहयोग से दुर किया जा सकता है।